

प्रतिवेदन के स्वर

श्री रामदयाल सक्सेना



नवयुग ग्रन्थ कुटीर
बीकानेर

प्रकाशक ।
नवमुप नाम कुशीर
बीकानेर

प्रथम मुद्रण
वर्ष १९६४

मुद्रण
कार कपडा

आवरण चित्पी
लासापम बोडवाधी

मुद्रक ।
एनूकेप्पल ग्रीष्म
बीकानेर

आमुख

‘प्रतिवेशन के स्वर’ में इस युग की रचनाएँ हैं,— यह युग जो गत महायुद्ध के बाद से आरंभ होता है। इसमें जीवन के मूल्य बड़ी तेजी से बढ़ते हैं। मनुष्य और उसके रक्त सहन, राज्य और समाज की विविध व्यवस्थाओं, में जितना परिवर्तन इस काल में आया है उतना सामय ही कभी आया हो। आकाश की उत्क्रांति की तरह वायुमण्डल में सत्ताधरों का प्रकाश जलता हुआ रहा है। कला और साहित्य में उसका प्रतिबिम्ब झलकना स्वाभाविक है। नई विधाओं में उसी त्वरा के साथ साहित्य और कला में प्रवेश किया और अधिकार जमाया है। पुरातन ने नूतन के लिए मार्ग छोड़ा है और जाते जाते उसे अपना आशीर्वाद दिया है और साथ ही यह संकेत भी करता गया है कि वह अपने पीछे धानेबासे नये युगों की पारणियों के प्रति बैठा ही उद्धार बना रहे। मोह-मयत्व के बंधन में अपने आपको बँधने न दे। निर्मित भाव से आगत का स्वागत करने के लिए तत्परता दिखाये।

युगधर्म के प्रति सचेष्ट पाठक पूव तैयारी के बिना भी सहज भाव से इस सदेश को आत्मसात कर सके हैं। परंपराओं के मोह-जाल ने उन्हें विभ्रमित नहीं किया है। प्रगति प्रवाह में जो प्रसर बेग उमड़ा है बरत करण जैसे उसी की राह देख रहा था। कुछ भी असंभावित नहीं। कुछ भी अपूर्व नहीं निवर्ति निमामक के रथ-चक्र की धाराओं के साथ धूमता हुआ वह उसी समय और उसी रूप में आया जैसा उसके लिए सृष्टिविधान था। इस युग का काव्य ब्यवस्तु, वर्णन और छन्द सभी और से निरव्य

आमुख

‘अतिवेदन के स्वर’ में इस युग की रचनाएं हैं,— यह युग जो नव महायुद्ध के बाद से प्रारंभ होता है। इसमें जीवन के मुख्य बड़ी तैनों से बदले हैं। मनुष्य और उसके रक्त सदन, राज्य और समाज की विविध व्यवस्थाओं, में जितना परिवर्तन इस काल में आया है उतना सामान्य ही कभी आया हो। आकाश की जल्काओं की तरह क्षणक्षण में सत्ताधरों का प्रकाश जलता हुआ रहा है। कला और साहित्य में उसका प्रतिबिम्ब झलकना स्वाभाविक है। नई विधाओं ने उसी त्वरा के साथ साहित्य और कला में प्रवेश किया और अधिकार जमाया है। पुरातन ने नूतन के लिए मार्ग छोड़ा है और जाते जाते उसे अपना आधीर्वाद दिया है और साथ ही यह संकेत भी करता गया है कि वह अपने पीछे आनेवाले नये युगों की आस्थाओं के प्रति वैसा ही उदार बना रहे। मोह-भ्रम के बंधन में अपने आपकी बंधने न दें। नितान्त भाव से भावत का स्थापन करने के लिए उत्तरदाता बनें।

युगधर्म के प्रति सचेष्ट पाठक पूरा तैमारी के बिना जो सहज भाव से इस सदेव को आत्मसात कर सके हैं। परंपराओं के मोहबाल ने उन्हें विभ्रमित नहीं किया है। प्रगति प्रवाह में जो प्रसर बेग उमड़ा है कण कण जैसे उसी की राह देखा था। कुछ भी अशंकावित नहीं। कुछ भी अपूर्व नहीं निरति निषामक के रण रण की आराधों के साथ धूमता हुआ वह उसी समय और उसी रूप में आया वैसा उसके लिए सुनिश्चित था। इस युग का काव्य यथ्यवस्तु, वणन और छन्द सभी ओर से निरन्तर

प्रकाशक ।
नवयुग प्रेस कुटीर
बीकानेर

प्रथम मुद्रण
वर्ष १९६४

कृष्यः
भारत समाज

प्रकाशक शिल्पी
प्रास्तापन बोस्वापी

मुद्रक ।
एनूकेयनन प्रेस
बीकानेर

आमुख

‘प्रतिवेदन के स्वर’ में इस युग की रचनाएँ हैं,— यह युग जो गत महायुद्ध के बाद से प्रारंभ होता है। इसमें जीवन के मूल्य, बड़ी तेजी से बढ़ते हैं। मनुष्य और उसके रहन सहन, राज्य और समाज की विविध व्यवस्थाओं, में जितना परिवर्तन इस काल में आया है उतना साधारण ही कभी आया हो। आकाश की जल्माओं की तरह सत्यसत्य में सत्ताधरों का प्रभाव जलता बुझता रहा है। कला और साहित्य में उसका प्रतिबिम्ब अत्यन्त स्वामाधिक है। नई विधाओं में उसी त्वरा के साथ साहित्य और कला में प्रवेश किया और अधिकार जमाया है। पुरातन में मूल्य के लिए धर्म छोड़ा है और आते जाते उसे अपना प्राणीवर्षि दिया है और साथ ही वह संकेत भी करता गया है कि वह अपने पीछे धार्मिकता को धुँसी धी धारणाओं के प्रति वैसा ही उदार बना रहे। मोह-ममत्त्व के बंधन में उसे धर्मको बँधने न दे। निमित्त भाव से धर्म का स्थापन करने है कि तत्परता दिखाये।

युगधर्म के प्रति सचेष्ट पाठक युग तैयारी के बिना जो दृष्टि से इस सदेश को धारणता कर सके हैं। परंपराओं के बोझाले विभ्रमों में नहीं किया है। प्रगति प्रवाह में जो प्रसर वेग लगाएँ वह जैसे उठी की राह देख रहा था। कुछ भी अंतर्भावित नहीं। प्रगति नहीं निवर्ति-निवामक के रूप बल की धाराओं के साथ ही उसी समय और उसी रूप में आया जैसा उसके लिए निर्दिष्ट है। इस युग का काव्य व्यक्तित्व, जीवन और धर्म सर्व के है।

होकर भागे बड़ा है तो भी किसी को धिक्कायत नहीं हुई है। कवि का प्रतिबेदन जीवन का प्रतिबेदन है युग का प्रतिबेदन है। उसे बाणी देने मात्र का काम उसका है जो उसने यदि पूरी ईमानदारी से किया है, उसे रहस्य में जो जाने नहीं दिया है तो उसने कर्तव्य का निर्वाह करने में कोई कसर नहीं रखी है। अब उसे सुनना भी समझना लोकजीवन का काम है।

बीकानेर
१७ मार्च १९१४

शम्भुबहाल सकसेना



अनुक्रम

१'	सूक्ष्मांकन	=	१
२	अंतरिक्ष यात्रा		५
३	स्तासिन एक अभिव्यक्ति		८
४	बगूसा		१२
५	तस्कर		१६
६	मजगर घोर चांद		२२
७	घापा बिबाह		२४
८	कमार		२७
९	पनघट		३२
१०	मिथ्या		३७
११	नासा)		४०
१२	नफ़्त मु ४४ न		४४
१३	सोक्तत्र		४६
१४	भारबासन		५४
१५	घावात्मक एकता		५८
१६	ये उस्तू, यह चांदनी रात ।		६३
१७	नई कविता		६६
१८	एक किरण		६८
१९	दो बहनें		७०
२०	अतीत स्मृतियाँ		७४
२१	विद्योगिनी		७६
२२	बचपन कवि		७८
२३	प्रतिमान		

२४	उबखी घोर बिनकर	८२
२५	स्वप्न प्राक्य	८४
२६	बेताबन	८८
२७.	चीन की मस्यु पर	९१
२८.	सेना को हुक्मर	९४
२९	हिन्द की सेना	९५
३०	भारत एक परिचय	९६
३१	रक्षायण में	९८
३२	स्वामत, युद्ध ।	१००
३३-	स्वर्ग का प्रादुर्भाव	१०१
३४	हेमरघोष्ठ	१०४
३५	मुट्टर गू	१०७
३६	कैनेडी के निधन पर	११०
३७.	कवि घोर काव्य	११२

प्रतिवेदन के स्वर

मूल्यांकन

जीवन की रंजीतियाँ
सांस्कृतिक कार्यक्रमों के
रंवारंग विभाग में
प्रस्तुत करती हूँ
रोतिकालीन कवियों की
कवालीयों मनोवृत्तियाँ
केवल उत भीने बरों को हटाकर
जो सायाहृष्ट की युगल धृति के प्रति भक्तिभावना का
साहचर बनाये थी ।

रामनामी जुष्ट के भीतर
धूँध में,
जो कवरारे बकि मयम
उत्ती पुरानी छराव को
नई बोटलों में
नये लेबिलों के साथ पैस करते हैं ।
यह एक बिडबना है
कि हम उसकी निम्ना करते हैं
और इसे लकड़ मते छठारने के लिए
बिहाद के नारे लगाते हैं ।

मूल्यांकन

जीवन की रंभीनियाँ
सांस्कृतिक कार्यक्रमों के
संबंध में विचारों में
प्रस्तुत करती हैं
रीतिकानोन कवियों की
कवाचीवी मनीषितियाँ
केवल उस भीमें बरों को हटाकर
को साक्षात्कार की मुक्त नृति के प्रति अधिकारका का
आदर्श बनाये हैं ।

रामनामी कुण्ड के भीतर
पूँछ में,
हो कजारे बड़े नयन
उत्ती कुण्डी धराय को
नई मोतलों में
नये सेवितों के साथ केस करते हैं ।
यह एक विडंबना है
कि हम उसकी निगा करते हैं
और इसे सबके मते उतारने के लिए
बिहार के भार लघाते हैं ।

जीवन की बहुराहियों,
घब भी

उतनी ही रहस्यमय हैं

बितनी बिमानभीम कथमिचक्षुकार बहुचिन्तों के समय भी !

कर्त मावर्त्त, वैचारा,

उन बहुराहियों में जाँकने से

उरता ही रहा, उरता ही रहा

मानव हाड़ मांस का पुतला

एक अक्षुण्ण त्रिकोण है ।

अध्यात्म,

इतिहास और

अन्य प्रकृतियों के कोलों में

कोई समकोण नहीं ।



अन्तरिक्ष यात्रा

युग युगों से अन्तर मग में
जग रही थी धरतीसा बड़ी
अन्तरिक्ष के सीमाहीन भीमोदधि में
कौन कौन से रहस्य दिये हैं हम नुष्टि के ?

बलियों व पक्षों की कल्पना पर
बीरम के प्रथम प्रयास से
मन-मगूर भरता रहा जड़ानें
अहरह ।

अन्तरिक्ष-यात्रों की कथाओं का जन्म
कला और साहित्य ने
बुनियाँ की सभी आविष्टों में
सभी देशों में
बहुते दिन से ही हुआ था ।

सम्यक्ता की प्रगति के इतिहास के
हर कुछ पर
यह अदम्य धरतीसा
सजीव बनी रही ।
अपनों ने न मानी हार,
तबो रहा अमररत
अन्तरिक्ष केरन में

प्रजिबेरन के स्वर]

मानव

मित्र मिलता रहा

निर्मल उसे प्रणम नीलाकाश से ।

बछी पर डोलता मी,

कल्प व्यस्तता के बीच

बिना बंलों का घाटी

प्राकृत हृदय से बिबरता कहीं घोर रहा ।

जीवन घोर मरुत की समस्याएँ

मरुतोत्तर बुनियाँ की गुरीबियाँ

जलभी बरगु कुलभी नहीं

काल के बिजाल बर पर

महरी लुरी हूँ ये रेखाएँ

बिम्बा की ललकटें

जाल पर उभर उभर

कहूँ कहानी जल जीवन की

बिस्म

राज में ज्यों स्तुतिव

बना बना रहता सखीव ।

प्रमत्तः प्रसंगव विचार हुआ सजव

कछेर बरा छेड़

बड़ा मानव बल में ।

कुल बने कपड जल प्रणम्य प्रमत्तित के,

महती संभावनाओं की आँखी के साथ

एक प्राकृत लुरीवा जग

प्राप्तवाणी आबरण में

जीवन की गई कथा
गई व्यथा
मये उपवासमान
मये अभ्यास,
लेकर हुआ प्रस्तुत बीपित सितित्त वर ।

सामारित, दोपई प्रितम मे,
तीतोव मे
मालों की बाजी वर
सत्रेव सप्तारित में प्रवेय कर
मानव की विषय के मुनहरे लेख
सुम्य अवकाश को
साकारहीन बित्तियों वर
सावकता की धमिट स्वाही ले
लिखकर समार्वन किया अहान ।

सम्य सप्तारित
स्वप्न साध
निस्सीन विस्तार
निर्वल सप्तारित बीवधारियों की समारात ।
समारि धी समस्त सुष्टि
मुक्त साज
केवल समय की सात होथ
कथ जीवन बरिषी का
पहों मलजों में उवायेका
मालें गई गई ।

अन्तरिक्ष यात्रा में
 जाति धर्म राष्ट्रवाद के
 भीत के बरबर
 काम नहीं होंगे ।
 नये मानदंडों की होगी सृष्टि
 नया समाजवाद जल विस्तृत जलम् में
 एक नीहारिका बना घूमता रहेगा
 अविष्य के अनोखेवन में
 अत सहज पुणों पर्यन्त
 एक नूतन अकल्पनीय संस्था का
 होने को है जन्म बीज ।

अन्तरिक्ष यात्रियों
 बरम्बरायत विद्वत् की भाषाओं में
 क्या सब तुम्हें स्वाद आयेगा ?
 अन्नाने अन्नाने जीवन संतर्प से
 क्या बनेगा क्या विपद् या ?
 इसको सोचना भी क्या तुम्हारे लिए समय होगा ?
 महानद्विष तुम किन्तु
 अतीत के रहोने, किन्तु अविष्यत् के ?
 भौसा वह वर्तमान हुआ
 कभी सोचा है तुमने ?



स्टालिन एक अभिव्यक्ति

लौहपुरुष स्तालिन
पुण सुष्मा सोवियत संघ के सिन्धु प्रवर ।
लेनिन के साथी सहकर्मी
मार्क्सवाद के स्वप्न सुदृढ़
साधक और ईमानदारी के
स्वतन्त्र प्रमाण
अतर्कित तर्क
जंगल मकान से गये
अप्रतिहत शक्ति बिम्बु व्यक्तित्व ।

उठी जो उ मली कटकर गिरी
छाँव फूटी
तिर उतर गया तत्काल
बुद्ध हुए बह्मन् विकल
द्वय विदग्ध
बिराजत विहीर
बन का अमिष अन्न
बता, दामन ही गये
विरोधी तार,
कुर्बान,
काली,
मालती बसु,

प्रतिवेदन के स्तर]

रीचमायी,
 लज्जाशी,
 पू भीवार परक
 म्यद्विबायी
 बधिरु पयी
 नामा क्यों नामों के जनघन
 बैचन इगुस से राहु
 बामचकी
 बुकारिन जिनोबीय से गत घात अष्ट पुष्प ।
 तुम्हारी कृपा कोर से
 संस्वासीत नर पुष्पों के मध्य में
 अमलित कॉमरेडों को भी निजा स्वान
 बिबोही किताबों,
 अतमुष्ट धमिकों,
 स्वाचीनमेता बुद्धिबावियों
 आलोचक बैलानिकों,
 विवेधों में प्रक्षित कलाकारों.
 सदेहधीन लैखकों
 अम्मापकों छात्रों के दुर्लभ के साथ !

ऐसे अद्भुत महात्म के दुर्लभ
 होता के रूप में अमर महान स्तम्भ ।
 आज तुम्हारे कूर भीतायी व्यक्तित्व के प्रति
 अक्षरी है लहानुदुति
 ककला विनलित भाग्य दुःख में ।
 अब तुम्हारा अब
 बंधन है उती नाम्य डोर में
 बिलमें लक्ष लक्ष लोप

तुम्हारे कुछ इंगित पर
बाँव कर हुआ बिसे मये मे
सैमलिन के पीछे
इतिहास के धर्मरे मत में ।

तोबियत तप से तुम्हारी
साजों साज भूतियाँ
जब लोफ़ी धीरे हवाई का रही हैं
तुम्हारा नाम इतिहास के पृष्ठों से
मिटायो जा रहा है मिश्रित किया जा रहा है,
तब तुम बिना मानव के
भय हृदय में
मिले तुमने निर्यपता त
कुबला का जलबाव क नाम पर
अभिमत हृदय से निरन्तर जलाया जा
रहें जरी सज्जन कदम के साथ स्वाम पा रहे हो ।
जब भी वह तुम्हारी समाधि की कूतों से
उठ जाता है चुपचाप ।

सुख के तुम्हारे इतिहास से भय
स्तम्भित बिना मानव के
बावदूर तुम्हारे राजसी हृदयों के
तुम्हें धनर पुरवों की नीति में स्पष्ट दिया है ।

जलवाही लमाजबाव के जगहृष्टा
दुर्गा के रूप में तुम
पुनपुन वर्तना धनर हो ।

पड़ गये जो भी बरबदर की राह में ।
 गुमराह करलैवाले गुराख और इतिहास
 धारम और बचान
 धर्म और धाधार
 नैतिक बरगल पर
 अभिनव कसौटियों पर
 जोड़े हुए साहित्य,
 नक़्क़ ज़रूर प्रतिरोध

बनता जनार्दन के
 विश्वास की नींवें
 जिस गई प्रमाणक
 ब्रह्मा के महान् कलक
 बन्दे से बहू मये ।
 साइमन और कसकी बिरादरी के लीची मे
 मार्क्स और एन्गेल्स मे
 ब्रूक्स और बाकुनिन मे
 मैनिन और कोन्सटन्टिन मे
 स्टाकिन और बुखारिन मे
 बिज्ञान और वर्धन की
 समाज और जीवन की
 नई नई व्याख्याओं से
 प्राप्ता के पुरातन पिरामिडों की
 भेज दिया रत्नातल ।

मानव के अन्तर्गत में
 हुआ आधिपत्य जिस पुञ्जाल का,
 जिस बरगलक का,

[प्रतिवेदन के स्वर]

उत्तरे उत्तर पलक होमया
सृष्टि रचना का स्वकप ।

बाहर के सर्बदर से
भीतर के बपुसे की होड़ नहीं,
जोड़ नहीं पतका
किस्सा बिनास ।
कैला ध्वत !
अकस्मित परिवर्तन ।
निर्गल के डगमपाते चरल
से जैसे हूँ मानव की
जीवन के संहर में से
हड़ता से,
बैर से
अबध्य साहस से
बहा
जहाँ अबध्य लिख रहा है नई निपियों में
मुनहरी घासा के नये नये अवसन्त लेख ।



तस्पर

तस्करता के चोर द्वार से चुसकर
 मधुसूत हनीक ने कसाया घन केहिछात्र
 बुर्बन पिरौह का तरंगना बना है वह
 सोना के धारदार
 चलता उसका व्यापार
 उसके दम में हैं सेठ लाहूकार
 बरिष्ठ नेता
 पाँचों के चौकरी
 सरपंच,
 हिन्दू मुसलमान,
 नहीं है उनका कोई ईमान ।
 यों वे पाकवान्न हैं
 चीन के मुरीद हैं
 धर्मध्वजी कटारें हैं
 तत्पावरल बताते हैं
 पुलिस के संरक्षक में सुरक्षित है उसका कारबार ।

कुछ ताल नहीं
 एक डेढ़ का मोल उसके पास था नहीं
 घर में थे कच्चे
 बाजार में भी नहीं ताक
 अपनी घरबानी से वह निता सकता था न धाँक ।

[प्रतिवेदन के स्वर]

रातदिन ठाने
 रातदिन तेवर
 रातदिन लिखकिय
 मोखबान पड़ोसी से बीबी का लयाव
 उसे नहीं या स्कोकार ।
 सेकिय बहु करता गया
 दुर्लभ घोर सलवार
 दुर्लभ घोर पसे का हार
 बुद्धा सदन या आसन नहीं ।
 दीनदार, पर बहु मजबूर या
 रोबी कमाने का सलीका उससे दूर या
 रेखा या उसने म
 आमदन का कोई द्वार ।

उस आवाजे दिन
 आया आवाजक उसका आग
 बीबी की गुप्त आंख का जब मिला उसे लुभाव ।
 गिलर घोर बाबी के बैबर
 झूट मोतियों के सतसहे हार,
 छिंट के दुर्लभ
 सादन के सलवार,
 बैंगता रह गया बहु धाँसे काढ़ ।
 एक बार घोरत की कमाई में
 घायल लामे का हुमा बिचार
 पर लामबाग की दुर्लभ का सवाल
 बघड़े या आने,
 बहु चुपचाप या
 या बहु लाचार ।

कीर्तों से, धातों से
 धीरों से सात से
 धूल में छिपाये
 कबाड़ में लुकाये,
 ईश्वर में बचाये
 धातुबल धरम और प्रसाधनों का डेर किया उसने
 धाय लगा दू कने की
 किन्तु फिर सोच समझ जडोर लैगया बजार
 उठाये कई ली बचये
 नामधू का तिया डेढ़
 जिस घर उससी थी कई दिनों से धाँस ।
 धम्बल हुनीक ने की तस्करों से साफ़नाई ।

कल्या सुपारी कपड़ा, कालीनिर्ब
 चावल, चीनी चुरट की
 पुपपुप निकासी में बिया उसने घोव ।
 तत्परता और दुस्ताहस में
 मानवडाँट और जीवद में
 बेसीफ़ घाना बेसीफ़ जाना
 सोने और कैसर की पैदियाँ लाना ।
 होबया बहु नामावात
 होबया मिहान ।
 झूमवाबाद झम्बई बरों तले होबये
 भीतबी बंदिता इनाम सेक छाहूकार
 सराफ़ संतरी, बरबाभिकारी सभी
 मर्दे मर्दे को हूँ जिसे लफ़्फ़ लफ़्फ़
 केहुरों पर डाँते देख-सैना का नकाब
 धम्बल हुनीक के मुरीब हूँ हूँ पेरीकार ।

उनकी छाह पर नवाब बना घूमता है
 मरे बाजार कितना डर है उसे ?
 पीछे जब साक सयरा है रिफार्ड ।
 घोरत की नज़रों में उठा नहीं फिर भी
 तानों से खर्च करती वह गिर्य उने
 दुनियाँ में बिजली
 घर में वह पामाल
 झराव की कबाल में बूझा भी
 अन्तर की बोझ से पीड़ित
 हनीक का वह अन्तिम हुआ अभिमान ।
 मज़नों घोर पयइंदियों ने रोका नहीं उने
 होना नहीं बोरो घोर बोहड़ों ने
 सेना घोर पुनित भीकियों को कर गया पार ।
 इस कम का चा माहिर
 किन्तु वह गया कहाँ ?
 काकिमा का काकिमा बिना छोपी तूझान
 बिना जितो घटना के सावनी घोर सामान
 ऊँच घोर पनाम
 हो मये बिनुप्य बोव राह में
 सीन सीन द्वारा उने
 बोनों घोर का जहान ।
 इस्तान ली गया ।
 हैवान ली गया ।
 पुनित रोमांचित है
 बुनिया है हिरान
 दापुधों में लनलनी
 ताकरो में बुझान !
 आबुन हनीक का न कोई घर बिना मुराय ।

भाप बन उड़ गया या
बल ही बहा कहीं ?
रोक लिया चौपनीय प्यार ने ?
नहीं नहीं ।

बनकर रहस्य एक रह गया
न कह गया, न सुन गया,
डैड सो सोने की सिमिलियों के साथ
फुलित कस्टडी में वो बन गई थी बीतल
ओड़ते हैं कोई उसका संबंध ।
कोई बिजौटेल के बेयनलोट कांड में
पते हैं उसका हाथ जो कि
सीस्य मोबाय में बाँध ली डिल
बीबर बीर मिट्टी के घोल में बबल बये के
रातों रात, रातों रात ।
एक ड्रक सिमरैट,

बित्तके लिए हुनैबाला का उसका बालाल
पुराने प्रसन्नारों का थोक भाग निकला
बालते हैं इसको कोयल के प्रभाव ।

रोसी है हनीका
न कसूती है हृदय की बात ।
बीरान रेगिस्तान में
उसने लकड़ों में देखा
बकनाया जाते खते
उन नाक हार्यों से
बिग बर रत्नरहित होने का न करेगा कोई गुनाह ।

तार्द घोर कधीरों ने
 बरणाह घोर बीरों ने
 किया है समर्पण जतनी हुस्वा ॥
 घोर बताया हीसे हीसे कानों में—
 भे हैं सवितधानी लोग
 पुप रदना ही का वेता है।
 बरना राम-कोप का कहुर
 कर रहा है बेवा का इन्तजार ।



मजगर घोर आद

स्वैत मजगर सा भीमाकार ।
 मृत्युञ्जय दुर्निवार
 मन्तरिक में पसरता रँवता का रहा है
 भीलों तक लपलप मिहिरा लपकता
 डूब के बाँव को घोर ।
 लीन जायेगा उसे
 विजलीघर की बिजली के व्यापक विवर से
 झड़ता हुआ वल्ग्वर के कोपलों का बेत भरा पुष्पां छाह ।

संज्या की मोर में बयानुर-सा बाल शक्ति
 बादलों के कलमल संजल की मोर से
 भूल चौकड़ी जलाय
 ठाक रहा
 म्रोक रहा
 कर्म रहा
 सिमर सिक्कन सब
 अक्षित अक्षित धित
 स्थिति हवय,
 तिहरता या पल्ल निप
 मय सब का रहा कराल काल-काल में ।

बहुधा में भीत नम
 अपहित मुवावर हैं

[प्रतिदरम के स्वर

प्रभुत निचोड़ लिया कुछ डमित्त सर्व मे
 धूत लिया धूत लिया,
 जीवन का रस, सुखार्थ
 रिक्त मन रिक्त प्राण
 रिक्त ऐश्वर्य
 रिक्त मन-प्राणन प्रतीची का कलुष-दान ।

विमती का दुष्मा, नहीं
 केवली घमसर
 भीत रहा समूह
 कुलों का तोरण
 कर्मलों का धुनु मधुर हास
 धक बल भट्टी में कोपना रहे वे भोंक
 ताप तह
 बाल वर्य
 तुल तुल भट्टियों में भाँसते भनकते
 सोम्य कुछ राख तुष्ट का रहे हैं उनके ।
 भरती के बाँध बे,
 घरों के बे प्रभुन ।



भाषा विवाद

भाषा विवाद,
कसा यह भाषा विवाद !
मालव का उम्माव
अनसुन घों हठबाव
हरमाएँ, अल्लिकोड,
प्यँस, बिनालसीला
क्या भाषा-विवाद का समाचार ?

भाषा साहित्य, ज्ञान,
कसा, बिनाल
मालव की सावना के प्रमास
आप्त वातावरण में हुआ है उनका विधान
उनके नाम पर संघर्ष,
उनके नाम पर अनाचार !
सक्रिय है भाषा के प्रसार का वैराग्य
बिनाल और बिनाल है
नहीं है उसे रंज प्रेम ।

भाषाएँ नहीं चाहती साधारण बड़ करना
उनको न सता से बोह
भाषाविज्ञान है प्रमास
उनके सहयोग का
उनके सहयोग का

आदान प्रदान से ही उनका निगार होता
 होता उनका परिष्कार
 गृ पार होता
 धर्म-धर्म-योगना
 अभिषा सप्तला ध्यबना
 रस रीति प्रलकार
 भावा के प्रमेय द्वार
 सभी जुते
 प्रबाध उनमें प्रवेष्ट सक्त
 न ऊँच नीच सुप्रापुन का विचार
 विविध भावा-बोतियों क बर्षा जल से
 भरता है सरसवती का जलपार ।

कौन ऐसी बोली है
 कौन ऐसी भाषा है
 जिसका निराला अर्थ
 जिसका वृषक बिलास-सौत्र
 जिसका न किसी से संघर्ष सरोकार ?
 बातियों, फिरकों कबीलों के
 महावन में
 भावा-सत्ताएं फैलती हैं
 कमती हैं
 कमती हैं
 हरीचरी डाला के गड़े लग झूलती हैं
 करती कुर्बानों की कृष्टि
 गुरमित कुलों की कृष्टि
 गित गई गई
 वहाँ तक सम्पना घोर संसृति को आनी हृष्टि ।

जगमें न है कहीं बिबाह
 जगमें न द्विवा साक्षात्पराह
 हीने के बीछे बीड़ भागना
 न बिसका अस्तित्व कहीं
 स्वर्ग ॥ है बेकार
 बड़ने बी जगको
 पाले ही बाद-यात्री से
 बड़ न करो भावावस्थ का नैसर्गिक व्यापार ।



संगार

नदी की प्रचंड प्रसर आरा है

घोबन की छापी में

सब कुछ रिया बहा

किनारे पर छाड़ा ककार

पूक

स्तम्भ

दुविचार जलजट प्रेम ने कड़ीभूत

रोक रखने के लिए बिछा रश्मिहिमी को ।

प्रलय सहेत का कर तिरस्कार

कितनी के स्वप्नों में छोई

छिन्नी की पार में भीची

रोमांचिता

जम्मिला

रबी ग्रेन-रस में

खण्डन जमय में

खड़ाप यति नतिता

गलानुमतिवता रयाय

हुनपनि खली विचकयामिनी ।

नू से मगन तक
 प्रत्यक्ष चमकिरहों से रंग गया
 धवन बबलतर ।

जो क बड़ी सरित्
 लहरियां बिहूँक बड़ी
 झरनुत नू पार हैक
 कंकाल मुलिका का कड़ा का बिचप-ता
 बि-कंड ता
 न जिसकी ओर हृदि जाती थी कवापि ।
 जीवन का कौता अपूर्व स्वर्ण-दान है ।
 कम रस मंच का समन्वित कौतव
 कीचता है प्रतापत मन उबर
 उमार प्राज्ञ लहरों में धा रहा
 उफान मन में
 प्राहुल कस्तोमिनी का बेव बन गया
 बन गया प्रवाह
 नीन ही गया उसका मृत्य
 बिरकन वर उसकी
 सिहरन का बहु गया बाक ।

मुकुलितता कला के किमय स्नेह में विमुक्त
 कपार वही हैक था रहा वरमु
 बरिबर्तन का प्रता-कवार ।
 काल की विह्वलता
 बिकट भाव्यवक यति ।

[प्रतिवेदन के स्वर]

तलिमा बुझगियो बिजोम यनि

बक हृष्टि

रप्ट बुझकारतो

पटवती सहज कम

काटमे लगी कवार

भूमती लता का सोहान

बजाइने में उसमे लया रिया धर्मत धन

किन्तु प्रत्ययी युगल न पीत हुए

गीत के बने लये कई रहे कई रहे ।

नाथ दीव करक भी उनका

न उनका प्यार

बहा सरी सरिता की झूठ धार ।

निर्मल मे निस्वन जात-बीला पर

बाध मूल है उनका बहु अनन्य भेन ।

मुना का रक्ता है दिन में किसी समय

धर लगीत उन प्रायत प्रलय का ।



पमघट

कर दिया अरतगर संविधान है सबको

सबको समान अधिकार प्राप्त

कोई न बढ़ा छोटा रहा

धर्म निरपेक्ष भारत में ।

कौनों धीरे जातियों का

मजहूब धीरे सभवायों का

हुप गया बीत ।

हिन्द महासागर की बीर में

राहु—एक महाराज बना ।

कलाम है जुमाटी तक

जंगल से काड़ी तक

एक-सूत्रता में बंध

सदियों से विकरी मानवता की

मिला एकता का नया धारण !

एक बुद्ध

एक व्यास

एक प्रह

एक प्राण

एक मय

एक तान

उत्तरा भारत महान

बरती से प्राप्तमान तक कर्णपोचर
 जयह जयह,
 यही तथ्य यही ज्ञान
 सुनते हैं ऊँच नीच का विधान
 भ्रुसकर मानव-विकास में
 खुद गया है यहाँ का कल कल, प्राण प्राण ।
 गर्व से जटा झुम
 पूर्वजों का हुजूम
 छोड़ छोड़ स्वयं का नित्यानन्द
 आगया वह भारत-भू पर ।

नया नया बनघट
 नलों की नई डोंटियों का बनघट
 लबि पीतल के कसअ
 डीन के डीन और मोहे के बास्ते
 मिट्टी के घड़ों से लड़ने को तैयार
 कूटते बपास
 पड़े चुर चुर होते
 बनघट पर बाघम है घाजी
 ऊँच नीच का विधान ।

जीन कर सकता है हिम्मत यहाँ
 रात्रा जहाँ का है लड़ा यत्ता सबात्र ?
 हिम्नू मुत्तलमान
 लाम्बी घोर मोची
 सिक्का घोर फुई,
 घनम घनम डोंटियों पर धँडित के

जातिपों के नाम ।

मिट्टा बिम्बा जबको भये शासन ने परम्पु

मल से मिटा नहीं

बहु धेर-भाव

ज्यों का त्यों कजम है ।

कड़ियों में अढ़

ज्ञान बरिसा-सुग्ग

मिरा भुल जरा बिभाव

साहसी की साहसी न मानने का बीबड़ हूँ

मनों और प्राणों में संजोये बिच

लड़ रहे हैं बारी गर

कंड काड़ ।

ईर्षा ईश के बीब बीने में है उन्हीं कपाल ।

अधुतकन पाने की सामिकार

करते हैं माँव किन्तु

जसमें नहीं मानते हैं किसी शत्रु की भापीवार ।

टोडियों का स्वल्प जल

मिथानत लोकात्म्य की है

पीने का जिते सभी को है एक सा अधिकार ।

संविधान कहता यही

जसा संविधान का परम्पु

हो है कब स्वीकार ।

भूति पड़ जाड़ा बिना

बेबता संविधान का जो

तोड़ फेंकने की बसे भाव ही है तैवार ।

उन्हें नहीं जान
करने क्या आ रहे हैं
मानव के हकों का कर तिरस्कार
होड़ियों से जल उन्हें भरने न बैठे नंबर !

बीया घोर जहाया हुआ
पंखला प्रपातल जल
जाली से बहकर
कुड में गिरा है जो
पशुओं को अधिकार
रोषों का घर
इस जलती दीप्ति जलु में
घावा घड़ा जाने का कहाँ है उन्हें अधिकार ?
यह भी बिना बल बीत पासियों के जिलता नहीं
सार्वजनिक मनघड़ों पर है यह हाल !

सविधान की अवज्ञा का
कानून की हत्या का
नबलों को मिला है बड़ा कित व्यापरीठ से ?
एक तक जतेया यह जनाकार
बूझ रहे पापी
बधीर,
कुड-भानक
मनघड़ पर बर्षा बन लड़ लड़
राजेश्वर बाहू से
मेरु से
हिन्दु-समाज से

किन्तु उत्तर कहीं से नहीं आ रहा
जाता-बरत होता आ रहा विकृत
धर अस्तित्व का भरता जला आ रहा ।

पनघट पर धड़ा सिये
प्यासा लड़ा घटुल
रक्त-कर्मि का अघटुल
बेतो बेतो
अनागत सविध्य के आने के पूर्व
दे सहज-जो !
कृष्ण बलों के किरीट ।

पनघट को सविषम से होने दो
साक्षित जमी भत जाया तुम ।
नाश के कपारे पर
बचका न हो
समाज के धर्म-र डबि को
बहु भाषना बहु साध में
तुम भी रसस्तन में समा जाओगे
सुनो न इत सत्य तथ्य को कथाधि ।



मिथ्याचार

मिथ्याचार कहता पुकार
मुझे प्रथम मिला है
द्वार द्वार
घर घर
घाँस घाँस
ढाँस ढाँस
मेरे लिए सबसे बड़ गुरसा के स्थान
बही है जहाँ मिलता है बड़ मिथ्याचारी को ।

भाष्य की बिर्जना मेरी नहीं इसमें
बह है दुःख समाप्तन व्यापार
सत्ता से ऐसते सभी हैं आम
ऐसते सभी ये सदा
कोन सत्ताचारी कम
दुःख से रहा मुला ?

सतगुरु

द्वार

बेता

या कि कलगुरु

सत्ता का तिहु

बिर्जना रहा निरोह बीधों को त्रिकाल ।

मिथ्याचार बतके साथ
 ज्ञातन का प्रथम सम समया
 न प्राया पकड़ में कभी,
 लड़कड़ता तोड़ता हम
 पकड़ा प्रथमा सिकार ।
 ज्ञातन और विज्ञान सब
 मिथ्याचार के विच्छेद
 फिर भी कुछ रूप में
 हकताली सिकार का
 बसता वह मिथ्याचार ।
 साहूकारी में न रोक
 बाजार में न छेड़ें डोक,
 राज्य के सभी विभागों में व्याप्त वह
 ऐनों और वनों में
 बसा है इसने स्वाम ।
 बाजार में मुता वह
 बजाने में बूँचा वह
 निर्माण और विकास में है इसका प्रयत्न राय ।

मारना बतकी प्रयत्न
 त्यागना बसे मुद्रात
 जीवन का बहुत बड़ा प्रतिघात है मिथ्याचार ।
 लोकसंग्रह में
 धाम बुलावों में
 बहरा वह साकार ।
 धनिघण्ट भी वह बरवान तुल्य बरलीय
 ईश्वर में दास्ता वह
 फिर भी कभी कहात ।

घसघस की बर-बरीर बहवान से बहु
रकरा जाता विप्लवित
उड़ते स्फुल्लिप
होता दिखोद
विद्य त प्रकाश से भर जाता बहान,
भर जाता मिथ्याकार का श्रमान ।

गुप के ये स्वर्ण कल
इतिहास में घमर
उनको निदाना है य किसी के लिए आत्मान ।



नाला

यह नगरपालिका का नाला
दुर्बल भरा,
यह रेत भरा
यह कीचड़-काटा-थोड़ भरा
बहुता जाता
बहुता जाता
एक एककर यह कहता जाता
घने मोहों की मनोमया
पलियारों की दुख-बद कथा ।

अनभिन्न नासियों का लपम
अपस्मित नासों का प्रामिसन
पंखा नाला
इतिहास दुष्ट मानव-संस्कृति का
विष तबाह सन्मत्ता का
नागरिकों की कवि का त्रकाल ।
इत नासे में बहुते विचार,
बहु वाला है अक्षित प्रचार,
सब वारों का
ऊँचे ऊँचे धारणों का ।

है साम्यवाद इतमें निमान
यह लोकतन्त्र का रूप नान
यह माता है जीवन समग्र ।

अभिमानकबाही यह माता
कठोर घेष्ठता का बाहुक
इस का संभन करते बा-बा
हल हल
रत रत
रित रित,
बे समग्र विपन्न
बुर्बल मानव
हो रहे साम्यता का मुक्तर
को घबट
बिच्छ
संकट-प्राकुल ।
कुलकुल
पुलपुल
पुलपुल
विर से वंशों तक नहा
पिनीने मेंने में
माते को करते स्वल्प निरप,
बन-सैबा-रत रहे साथ
कतव्य तन्म, बे परिचरोप ।

भित्तों भूतों की बहा लाव
 लाया करता यह
 लोभ-प्राप्त ।
 शायों का लीह पावरल कम
 बिहृष्टियों पर
 बगधोर घडाघों का पर्व ।
 यह नगरपालिका का नाला
 पुन पुन से नयनों की पाथा का
 एक मात्र ब्रह्मन् कोल
 प्राणा-प्राकृता छोक-बोक
 इस नाम के वन के लक्ष्मी ।
 यह है समाज का कुछ स्वल्प वर्णन
 बिस्ति इसमें नाम-संस्कृति ।

पुन पुन की नगर-सम्पत्ता का
 कीर्तन कम
 बंदा नाला
 लक्ष्मी नाला
 कीर्तन से व बा पु बा नाला ।

यह इवात-वट,
 यह ऊपर नीचे से बगुन
 अस्वच्छ हृदय की बह
 बुद्धि का परम वणिज द्वार
 यह नगर-वास्य हैं
 पुण्य तीर्थ का परम कम
 निर्वाच

प्रमत्ति-लोपार्थों पर यतिहीन
किन्तु बुद्धि के बीहड़ में बिखीन
होने की आशुर है निताम्न
पहरा नासा, यह धाँस बात ।

• •

कितने झूठों की बहा लाव
 लावा करता वह
 सौम्य-मात ।
 बार्नो का लीह घाबरत बन
 विह्वलियों पर
 बनघोर घटाघों का परी ।
 यह नवरसालिका का माता
 बुध पुग से नपरों की गाथा का
 एक मात्र प्रकल्पन कोश
 आका-आकांक्षा झोक-झोक
 इस नाने के नय के साथी ।
 यह है समाज का कुछ स्वल्प वर्णन
 विहित इसमें नागर-संस्कृति ।

बुध पुग की नगर-संस्कृति का
 जीवनत कथ
 पंचा माता
 सकृदा माता
 कीचड़ से बचा, बुद्धा माता ।

यह स्वास-कद,
 यह ऊपर नीचे से प्रभु
 प्रत्यक्ष हृदय भी यह
 बुद्धिता का नरक बधिर द्वार
 यह नगर-मार्ग में
 पुण्य तीर्थ का नरक कथ
 निर्वाच

[प्रतिवेदन के स्वर]

प्रपत्ति-सौपन्नी पर पतिछील
 किन्तु दुर्यति के ब्रीहक में बिलोन
 होने को धातुर है बिताना
 बहुरा बाना, यह झोत बाँट ।



मफा नुबसान

हाजीबी को है पाव नहीं
 ये कदम बेसों के चाई ये
 कम लाभ लाभ से भरते थे
 दुख-दर्द बँहाते थे मिलकर ।
 है चुन गया उनको रिस्ता
 बहु पाप द्वार पर प्रवेश करी
 छाकरी शुष्य में
 घर में उसको ठौर नहीं
 जो प्यार बहिन का पाती थी
 जो दुहिता ती जन भाती थी
 सोती थी घायल में
 दूरे माये के पास
 रचगती
 गाली-ती कुछ स्नेह-बीत ।

सीते-अम्मी, आते-भीते से
 हाथ खीरते चलते थे
 उसके कोमल बिलने शरीर पर
 पुष्पकार घरा बा प्यार विपुल
 एक, जब से हाजीबी बने नहीं ब
 बाड़ीबान पास से ।
 प्रातः से रात तक

धूप हुआ पानी में
बँतों की बोड़ी के नाथ साथ
होया करते थे वे धनाग्र
स्टेशन के गोबरों की ।

बँतों का उनकी या गुमान,
मापों का का अभिमान बड़ा
बुद्ध देता था
घट्टा पहरा संबंध
कि उनकी भुला नहीं पाते थे वे
हत समय
कबकि जीवन का सीधा घोर सरल
सस्ता धनाग्र का
सस्ता का सब कारबार ।
बँतों मापों का मोल
न-मुद्र का
पर उनका जीवन में का स्वान बड़ा
मौहान-स्नेह-बचन कटोर
थे उनमें वे घों कने हुए ।

किर किर तिनिक पर
उठा सवानक एक बड़ा तूफान
बुद्ध-आह्वान
कि बिगमे कूट उठा
जीवन के धमाक़ का विराट
घात बड़ा बिजान बहालागुनी ।

बदला समाज

नव बदल पये बलके नुह्य ।

बाड़ीबान,

बाड़ीबान कीन रहा बाड़ीबान ?

बीबन के पीड़ पर

छोड़ जावा गाड़ी-बीन

द्वेष नाच पांच सो की एक-एक

रातोंरात बाड़ीबान अब बया ठेकेदार

पाड़ीबान ठेकेदार

पाड़ीबान ठेकेदार !

हूब-बतवार ठेकेदार !

बुला बिला काला बजार,

बुल बला व्यापार

बल्लसि के भु म पर

का बड़ा ठेकेदार

तीर बला बाँबी की सरिता के धार-धार

मया मवा सधुकार,

बीन घीर कलाम पर व्यापी बड़ा धमार

नबका-नबीना हुज्ज-मलाज से

हो मया प्रपन्न प्यार !

काल-मस्तामूर का नार कर बिस्तार

बील घीं बु बलकी ली

रमुति में कभी कभी

बठला बजार,

कभी कभी हाजी की पाँखों में

[प्रतिवेदन के स्वर

धूम जाता बरक;

बाड़ी बीस, बाड़ी बीस

घास कुल कच्चा घर

घोपन में, नीम तले,

करती बुबाली कड़ी पाप कहीं धोखे भू है ।

स्वप्न उड़ जाते

बल मात्र में परम्पु से

बीतत का नन्हा होता जाता भित्त पहरा ।

छप्पर के स्वाम पर हबेली का निर्मात

होता गया, क्यों क्यों बेचारी बीन

दुर्बल, पाप धों बिलकती गई

कोने से कोने में

कोने से कोने में,

घम्ट में होमया कोना भी उसे मुहान्त ।

बीनन परसता गया

नया पहरा बढ़ता गया

पाप योगाल किम्पु होते बये संकरे ।

हाथी ने उठाने मकान पर नकाल

भूक बभ्रुओं के डिम्पु पिनते बये स्वाम

बीन-धर्म के स्वकन

हाड़ी घोर घबकन में

हाथी का बिल उठा कप ।

मामर भी तकिया भी

कनकाव

मोरत कबाब,
 शानो कबाब
 बे हिसाब
 हाजी की ही गये हुसारे नबाब

पाय से गया रिझा हुआ
 या गई वह लकड़ पर छूट ।
 कहीं कहीं से हुआ किनारा
 कड़ी है बेचारी बेसहारा
 देख रही बेकल बिरास
 कहां गया स्नेह-पास ?

घाँवों का जामा,
 हाजी की का
 बिलकूल घाबरा है नाक के सप जाम पर ।
 पाय के अस्तिपर्यन्त बेख
 लपा रहे हैं हिसाब
 गया हुआ कितना हुआ
 नभ या मुकताब ?

नका या मुकताब,
 पूरा उछली बरा-बार,
 पाय कड़ी तावती है
 काँचते हैं हमक जाम ।



[प्रतिवेदन के स्वर]

लोकतन्त्र

जन मन स्वतन्त्र,
जन जन स्वतन्त्र,
भारत में ज्ञाना लोकतन्त्र ।

नारी स्वतन्त्र
पर की विमोचिका से बाहर
जल पड़ी
चञ्चलती सरिता की,
तोड़ती कबारे
मर्दा का तिरस्कार करती ।

स्वच्छन्द सम्पुर्ण का जीवन
अनिनय आकर्षण जन
उनकी पतवारहीन नीचा-ता
सीधे बार की ओर से जाता
धूम कर नहीं बेजाने की बलि घसे,
बुझ जा अतीत का
होयेगी वह नहीं भार ।
जन मन का राष्ट्रीयकरण कर
राज्यहीन समाज
बनाने का प्रयत्न तेकर
बहु परिश्रम, बहु ही प्रयत्न ।

नारी स्वतन्त्र
 अपनी इच्छाओं की राणी
 उसकी अपने से प्यार
 घर गृहस्थ पति संतानों का भार न उस पर,
 उन पर ही अधिकार राष्ट्र का,
 परिधि मोह की जसे बाँधने में अब अक्षम,
 व्यापक उसका प्रेम
 समावा बिलमें जान जग ।

नव नृत्यों
 नव लंबधों की नवस्कृति से
 वह परिचायित,
 नव समाज की प्रविष्टाति वह
 स्वप्नों के अपने भारत में
 करते निकली बरछ
 व्यवस्था सुतन की वह ।

पुन-पुन-भीलें पुरातन नव
 उत्सर्ग त्याग से भीलें
 कुटुम्बों-परिवारों में नवा
 प्रौढ़ एत दुस्व
 स्त्रीएँ वह निकली
 पाँकों में सेकर एक लय
 बाहरी में बिप के बिचन बाह्य ।
 नारी स्वतन्त्र ।

जन मन स्वतन्त्र,
जन गण स्वतन्त्र
भारत में जाया सीकतम् ।

घर घर में
नगर नगर में,
घाम घाम में,
डगर डगर में,
पुबक प्रौढ़ जन,
बाल बृद्ध मन
सब में स्वतन्त्रता का प्रान्वद
उन्मत्त बेन से प्रबहमान ।
जीवन बंधन व्यापार शिथिल
इतय सामाजिक उपकार
प्रसंगत मुक्त वयन
उन्मुक्त मान ।

मतानुगतिकता छिन्न
दिग्गज जन
नव जीवन
उत्थान नवोन्नति
नये नये वच
नये सिद्धि वर नये उपग्रह
अनधीही अन्तर्मुखी
अनधीक्षित वसाधों में अन्तर्लपित
निर्बाध
निरुद्ध
निरवर्तन ।

प्रतिरोध के तार]

स्वर्णर बर
 स्वर्णर धाम
 स्वर्णर धीम,
 स्वर्णर धाम,
 स्वर्णर धर्मियों का प्रवाह
 है बला बहा प्राचीन, पुण्य
 यद्वास्वद
 मन के स्निग्ध सत्व ।

स्वातन्त्र्य-सूर्य के नवानीक में
 नये सूर्य
 नव हृष्टि
 सृष्टि नव
 ऐश्वर्यम धर्मिता आका
 वातानुकूलित जीवन के धीर-धीर !

संतुलन सूर्य अधिवात
 तबहि मानव-जर में उन्मात
 उन्मातित
 आकाशमिक्त विस्वात
 कोटि कोटि चरलों में
 बपला की पति बचल
 बुद्धा एही बीबद
 मृदु
 सूर्य्यों से बीभिस
 उत्पन्न विपुल
 रिक्त भय
 स्वस्व धिराधों
 प्रचुर संभावनाओं से उदभवत लीकतम ।

[प्रतिवेदन के स्वर

बस मन स्वतन्त्र
बस घर स्वतन्त्र
भारत में बाप लोकाग्र ।

• •

आश्वासन ।

बिर तबीय आश्वासन
 प्रवृत्ति-यत्र का संकल,
 बल,
 सक्षुप्त,
 सत्प्रेरक,
 युव युव
 प्राप्ति का वृत्त
 आश्वासन !

आदिम युग से हाथ बाज
 कल्याणों के बीहुत
 दुर्धम बच,
 संकटालय
 छरक छिरितक,
 सामर संघट
 बुबाबो-क्यातामुक्तियों के
 कर्षित
 बलते मुलते बच
 करा बुके सत्प्रेरक
 सक्षुप्त बलके बलिष्ठ बल

प्रति बार नये
प्रतिदिन नूतन आश्वासन
जीवन का भरतै रहे रिक्त बर
तरल
हताहत से प्रतिपत्त
छत्तै मानव को बाहरह !

घोड़ धर्म का एतन् वेद्य
उपदेश नया
परिवेश नया
मन्दिर भठ भूति पुजारी मिल
आश्वासन का सुखभित वराध
भरता
भरता
पुन पुन
बन मन ।
पुन मानव
लड़ता
भरता
विरता
बढ़ता धनपक बाहुल !

आश्वासन का बलिदानी बच
 रक्षातु हुआ
 अतः सहस्र बार ।
 काँटे-कुपाख की तीव्र बार,
 आश्वासन ध्वज पत्तीलन कर
 कैदार्थी विद्विषों के मन में
 भर चुकी सबेहों प्रसर ज्वार ।

निर्मल पर्वत सोपानों पर
 बढ़
 पिए,
 इसके बल
 हुए सफल
 आत्मनिष्ठ नरित सुधारण;
 कूर्छित
 मुँचित
 पत सुमान ।

आश्वासन के जीवन भर
 दीर्घायु सतत
 सत्कृत्य
 भेता
 आपर
 पूर
 उदेहते गये प्रवृत्ति के बल धाक ।

[प्रतिवेदन के स

पुनः प्राप्त आशावातन
 प्रकर मानवता हित
 सदय हृदय
 परसेही साथी कृपणोव
 निर्माण कर्म लेकर
 समुपस्थित
 करते जीवनित्तन में दीवित
 'आनामो' '८०' में
 प्रति व्यक्ति एक स्रष्टा प्रतिदिन
 देने में होने हम समर्थ ।

यह दशाधिर जनरान्त
 महान जनवाद की यह बिजलीपलक !
 आशावातन भरवान प्राप्त कर
 बिद्यता
 प्रविष्ट
 संवित
 बिद्यलित
 बिद्यलित जन मन अनुभव ।

एक प्राप्ति का मुक्त
 तीक्ष्णता
 संस्रष्ट आशावातन ।



भावात्मक एकता

सन्तविरोध-व्युत्पन्न
रोमरोम
नम्र नम्र
एकीकरण जन का
अपमान
भावात्मक एकता
दुःस्वप्न मात्र ।

सोने कात कात बिज
बिज बिज
बिज तंतु
माल का बचाव बिज
बहु बने बिजोम पति
उत्तर लकी,
ग्रहण हीन मनी
भावात्मक विचरण उवाच जन जन का ।

बिछल प्रयास एक-बुलता के
 ओवन-बर्छन-दुग्ध में
 पड़ गई छटास स्वार्थ-वरता की
 बिबल बिब व्याप्त
 सुधा सिन्धु ।
 छपनी छपनी डफली
 छपना छपना राव
 सब बाटे छो बजाटे
 नहीं सुनना चाहता
 कोई किली की बात ।

इतिह कदम के मैता
 सिवस पंथ के प्रलेता,
 लीची,
 समानी
 सजाई
 सय ओर रहे राई
 लौरस-बी-बतना दुग्ध
 कम जानत ?
 नहीं नहीं
 मैदु दग ।
 सत्ता लीलुव
 बिदेसी गिता
 साहित्य भाषा
 बिबि बिधान के प्रति निध्यावान ।
 भुन निम वच निम कव जान ।

मायात्मक एकता की प्राप्ति
 राष्ट्रबाबा
 हिन्दी का पर पर प्रतिव्यापन ।

श्वोतिस्किरण-प्राकाशा
 सर्व सेवा हृष्टि
 ऊपर से नहीं, नीचे से
 जन जन से
 जन जन से
 उच्छ्वसित,
 उन्मत्त
 भारी पल रिसता को
 सब व्यवधान को
 प्रस्तुत कर समुचित समाधान ।

साया के दमर से
 जीवन की विरिक्त्यरा में
 बहकर साया
 बनेवा एकता का हीमेष्ट,
 कुछ बायेपी क्षिप्तता
 निम्नता
 क्षिप्तता
 क्षमिन्नता के बातावरण में
 पूरा उठेवा जन पर जन प्रविभापक बय है ।

[प्रतिवेदन के स्वर

कल कल

कल कल

इसेरदोन

नूदोन

प्रोदोन

कनालु

कुरालु

करकालु

जितन-संवीत की स्वर लहरी में

धवित हो जायेंगे

होया आशात्मक दुःख का समाप्त प्रसार ।

होमी नहीं आयात

मिलेबी न भेंट

बर्षन के हृदिकोल में

न चलका कही विनिवीत

अपने प्राणों के प्राण में

कीरनागर में शिरनु-बबकप

उत्तम अविश्व कप

रमा है

बहु कलती राया है

उत्तमें निहित है अमृत रागिन

उत्ते सोमा नहीं, वाया है,

बाहर अवनाना है

बही हो हवारा अयात ।

केलाज के घिबर से
कम्पा कुमारी तक
हारका से कामाक्षा तक
बाहरी बाह्यमयी एककपता का व्याख्यान
मिले है भारत का समुत्थान
यही जीवन, यही है मान
प्राप्ति में जातमान ।
यही फिर अमिन्व अक्षय तान ।



ये उल्लू, यह चांदनी रात !

मधुपर्दिनी

चांदनी में लीने परती घासमान !

रेल्वे का घासम

घार की रास्ताम ।

कहाँ है कड़ घाये इतने चम्पू ?

किन् बिपावनों को कमाड़ घाये

दिने कहां से से हूबान ?

उम्मीत ली कतालीत से पहने

किन् मुनवान लंहहरो में

किन् घ बेरी कुमियों में,

बंद से से ?

रबरदर घाव ।

चांदनी रातों की लक्ष्मी करते

इनके जारी जारी ईने

बाजबारा में हड़कन

घमटिल में उच्छान ।

मन्गिरन के रबर]

नई कविता

तोड़ बड़ी धमक
 कविता-बारात समग्र
 मुक्त बान
 मुक्त तान
 मुक्त जन-मानस
 कहेरना सहैरना है
 जगजगत भाव-विभव ।

छावपत सरस विलस
 बहिक प्रवहिक,
 नतिक अनतिक
 कुंठित अकुंठित
 नम्र अवकुंठित,
 विश्व मन्त्र, विश्व प्राण
 ध्यात शिरशीवित
 नवीनित
 बीलापल्लि कल कंठ-विभूत
 नई विधा
 सहस्रपा विभक्त
 कीम बली नये बल ।

मृतम गुरातन से बीच
 पड़ा देन रहा दोनों घोर,
 दोनों घोर
 नवस्यापित
 नये प्रतिमामों के लेश लिये
 नया भील-बहर ।

छपमा उपमेव नये
 धनपइ
 धनमेध
 धाम धन
 सल सल
 राहुल प्रतीकों के धरम्य में,
 धरत धन-दुतालिमा के
 धनमे धनियों के धनों का
 यहाँ वहाँ धान भी धनलुहीन
 धितरा पड़ा बरगु
 धन रहा धनना
 धन से धन रहा नन
 धन कर रहा धनानु
 धनिल धन
 धन रहा धनधियल धनना ।

नई कविता के बावद धनित
 नन धन धन
 धनधन धन धी धनना मे
 धन धन रहे हैं धन धन धन ।

प्रतिवेदन के स्वर]

उठो कवि, जलो साव,
 जानै बी न बसे अनाथ
 परम्पराओं के बोरे से बाहर ।
 प्रणम्य नमः धर्मदा
 जखों से तुम्हारे लीम्य,
 होने को इतार्थ पहा— वही
 कहा ?
 यहाँ, इपर इपर यहाँ !



[प्रतिवेदन]

एक किरण

एक चरण एक धरण
 एक ज्ञान एक भरण
 एकता प्रसार में
 समेकता समर्पिता,
 न रूप राग
 भावति न
 प्रवृत्ति प्रमेय
 नाम धाम ध्येय ध्वनि न ।
 मोरच निराकर
 निराकार
 वातनाभिहीन
 महामीन महापुण्य
 शिखिहीन इन्द्रमुक्त
 अनिबद्ध अनादिबद्ध
 अम्यक्त एक विगुह्य,
 विगुह्य,
 एक चरण, एक धरण,
 एक रूप, एक किरण ।
 दाम्य एक, माय्य एक,
 अम्य एक आम्य एक ।
 एकोऽहम् अनेकोऽहम्
 अहं अहम् न त्वम् न त्वम् ।

दो बहनों

बसंत हिमाल में
शिशिर में,
श्रीमन्त में
वर्षा हिमाल में
बड़ी की बड़ी सुइयाँ
साथ साथ
पास पास
जुलपाव के सहारे
राजमार्ग के किनारे
हंसतीं किसकतीं
बिरकतीं
बिरकतीं
बिरकतीं
कहाँ जातीं ?
कित्ते खोजतीं ?
खुद ही नहीं खोजतीं
न खोजतीं
न खोजतीं हृदय के भाव
परिचित अपरिचित है;
सम्यक् सम्यक् जातीं जहाँ
अपने में समायी
तेरते सबनों जरी धाँवें लिये ।

दात सहस्र बर्ष उपरान्त
 लीम्यता की प्रतिभाएँ
 छोटी बड़ी सुहयाँ
 समय का प्रचलन गहे
 बँसल बरखों से
 बपन, बपन बति
 बर्षों की हस्तश्री पर
 साधात करती
 निरय
 उसी भाँति आती जाती हूँ ।

न बचती,
 न देखती,
 अहम्य धार के बाहु बँबी
 निरन्तर
 प्रसन्न बसात ।

उनके पहचिह्नों में
 ली बर्ष के
 बिहरी माँझों से
 रब काव्य
 स्वच्छन्द चम्ब
 धूमधुना बडता पुलकित तपीर,
 हतितरंग की शुभ्र बीला बर,
 धुमधुनों के पतिपारों में
 धुरुरों की महति मिल
 बतरती बँगीत की तरल मधुर लहरें ।

अविरोध के तब]

गुपारों और तारों जरी रातों
 पोंछती झबनम से
 रश्मियों से
 इनके बरपनों के दासताक को
 छाठीं पहर ।

प्रकी की ये बुझपा,
 समय को पड़नाम्नी
 हृदय को बिसोती और ध्यानी,
 मन्त्रमयों के छद्म ललाट
 और दाह्य व्यक्तिगत को
 पेंरों तने रो बही कलहों
 प्रपों में दासक लाभिमा लिये,
 मोली प्रबोली
 ही भी रक्षित !

शेषक कविता की बहनें,
 क्वरस प्रामरी
 बुलापरी
 बहुत बपत प्रपबेकिनी
 सुकेकिनी, नतामता,
 इ बती बसती किछे ?
 पुन्याय के लहारे,
 रात्रपय को बुहायती
 पसत बरीनिषा

धानती रैचुच्छ
रात से प्रभात तक
अपगत जाग है,
मग्न का रूप तग्न का भुल ।

कोन वह भाग्यवान
कोन वह क्षमवान,
कोन वह युवा तपस्वी
मनस्वी रंजन रसत कवि
मुग्ध हृद्य
प्यार क्वाल में
झिझके, जराती भी
बलती का रही वे युग युग
समग्र बरुड प्रविधान्त ?

१ १

प्रतीत स्मृतियाँ

पार किते घातो मही
 संघ्या के जुहावे में
 किछोर प्रतीत की
 कल्पना कुतुम बत्
 इन्द्रधनुषी स्वर्णिल प्रच्छाद रूप
 नाम वसिष्ठ पार्श्ववर्तिनी
 बत घत्र स्नेह मृतिवा ।

हास विलास वस्त्रास पूर्ण
 कम विषय बीचियों में
 मनुता पुलिन पर
 निबुल निकु को में
 अ कित हूँ कितने रास लाल
 हास भास ।

समय की सरिता में
 यह मये कितने वर्ष !
 बुध घुमाव
 देश प्राप्त
 प्राप्त सब धूम रहा
 अजित अकित
 धूम धूम निरुध
 ननुवन मुग्धावन योक्तु नंदप्राम ।

[प्रतिवेदन के स्वर]

भुमी कथाएँ बन गये
 मनु रजनी के
 धननुवृत्त मुख धर्तारय
 जोखें इतिहास हो बिजरे
 मानधर्म के मनुहार भरे
 पल्लव निवेदन धर्म तन ।

नूतन पुरातन में
 रहा नहीं व्यवधान
 समय की दूरी का न ज्ञान
 जलों में समाये
 युव कल्प
 स्मृति का तरल तरल बीजियाँ
 पल पल की रहों
 बु पले झिलावट
 सुदूर अतीत जहाँ जासमान
 बीता धातमान
 सहज समय बना
 तना तिरों पर बिस्तार ।

नक्षत्र लोक में
 दो गई भीहारिकाएँ
 धनु ३ प्रकाशविह
 दिनरे धलीम बिस्तार में
 न निपली न उमका ज्ञान
 कितने वहाँ के ?
 वहाँ गये गहान ?
 रिमुक्त स्मृतिवों में
 वहाँ रहा उमका स्वान ?

वियोगिनी

मीन के सम्भाडे में
रहा हुआ मेम का इतिहास
को क्या
बर के आम्बेरे कल में
मिलन-संभ्या
बनी गई उबाल !

कितना सोचा था
कहने कुतले में
बीस बापपी लारी रस
मिरा बंधु
कंठ फड़ हुआ
भूल गई मनकड़ी बाल ।

वे प्राये धीरे बने वये
मे वये मयने लाव
हाथों की मेंहरी,
घरों का महाकर
मन के महोत्सव
घायरों की स्मिति प्रबलात !

[प्रतिवेदन के स्वर

सीढ़ी मए सुब सुग की
केलों की उत्तमन
माएँ की सुदन,
हरण की बड़कन
मावों की हरणन
माँकों की बरमात ।

● ●

संजवन कथि

‘संजवन’ हिरी के बापक कवि
 जन्मापक कवि
 मभिर से ‘मधुबाता’ लाये
 ‘मधुबाता’ लाये
 ताकी सत्पर प्याता लाये
 हाता लाये
 देवाचन बुला,
 प्रार्थ बुला,
 पक्ष में पंचामृत रखा पड़ा
 जन-मानस समझा
 वैद्वान् बितुष
 ‘संजवन’ की कविता
 का कुछ देता नशा पड़ा ।

साहित्य पुतारी हुये लज्ज,
 पड़े बिल्लाये ‘हाय हाय’
 विप्रों के मुँह से कड़ा शाय
 ‘संजवन’ की कविता तुरा किन्तु
 सब रहे डालते
 बाल-मुँह
 लुकाविय

[प्रतिवेदन के स्वर]

बीबी मतवाले बने प्रमित
 अनुशासन शास्त्रों का टूटा
 बह गया धर्म
 बह गया कर्म
 संयम टूटा
 संयत-मुक्त अनुशासन में ।

अनुपम अनुशासन की हुलसल
 सार्थ जीवन में नये मोड़
 भाषा में नूतन वृत्ति
 पदों में नूतन वरिष्ठति
 विरक्त मन में
 तिहरन तन में
 बातावा ध्याना से तन प्राण ।
 'वचन' की कविता में
 स्थापित विद्ये
 नूतन नव नये ज्ञान ।

'वचन' नवयुग के कवि
 नव वच की प्रति
 नवयुग के उगम करण
 साक्षर वच रत के बाहुव
 नव धाम धर
 कर शिष्ट करण
 ही नई धाम विधायन गिरा ।

प्रतिदान

पाया मर नै अमित बान
तुम से प्रभुवर !

धुन भरदल

तुम्हारे संकल्पित घरों से ।

सागर सरिता गिरि कानन

तब रात्रि शिखर हिम शिखर

भीषण-बिभु न,

घन तड़ित् न्धार

कुसुमित विपत;

मलयज बघार,

हृत्पतित उत्स

भरभर निर्धर,

ध्यापक प्रसीर ध्याया भित्त

रवि लक्षि नक्षत्रों बड़ा नील नम

कपा

तमिसा

धूमिल संभ्या;

अस्य ध्यामता घरा,

सकलता कामकेतु,

पत्नीकुल कलरव विपुल

बचत दल संकुल,

रोम रोम उस महाबान से बग्य

[प्रतिदान के स्वर

कुछ मन
 प्राण कुलक परिपूर्ण
 अज्ञानत हृत्कारण हृदय
 सब करण प्राप्त हैं पुनः
 समर्पित करता वह सब
 को तुमसे साधा या
 क्यों का क्यों—
 अनवरता,
 अनपुष्टा,
 अननुमित
 तुम उसको लो लहेक ।

को कुछ या तुम्हारा
 उतीका लेके हैं तुम्हें
 हो क्यों कितनी विधि लकीर ?



सर्वेष्टी और दिनकर

हो तुम विल्ली प्यार करी
कितनी
मनुहार करी हो तुम
उब बघ कर लेती हो
पल में, सर्वेष्टी
हार की मोह कड़ी ।

संख्या के सीमन्त बिन्दु पर
बिन्दु,
पथों में वैज्रानि नीरव
घोड़ों पर हिम हाव
छाँस में सुरभि
स्वयं विश्वास नरा कर ।

तुम हो पूर्ण लक्ष्म
नाम पर वहीं तुम्हारा
लिखा किन्हीं मन्त्रों पर ।
तुमुक्ति
अप्सरसि
तिमटी काया कलित
प्राण के प्राणिकन में ।

[प्रतिवेदन के स्वर

विपुल बस है,
पुपुल मिलिबिनि,
हरती ही जलक दिवन कवर ।

पुकरवा मुर लुहें खोमता
छायावन है,
दुम करती खल
छोड़ और तारों का मिलविल
मिल 'दिनकर' है ।



उवशी श्री

हो पुन बितनी प्यार भरी

बितनी

मनुहार भरी हो पुन

उर बर कर लेती हो

पल में, उर्वशी

हार की छोड़ सकी ।

संझा के लीनस विग

बिन्दु,

पलों से बँधवि नीर-

घोठों बर हिम प-

लाल में सुरभि

स्वयं बिरपा-

पुन हो पुन

मान बर

लिखा ।

कुमुदि

अप्सरदि

सिमरी ।

प्राण के

प्रतुल सहस्रियों का कल कंधन
साथी हैं बीचों-बीच कुम्हड़-कुम्हड़
बहु धर धर धर धर
रुम्हड़ के प्राणों में
सब से कुछ
कुम्हड़-कुम्हड़
कुम्हड़-कुम्हड़
कुम्हड़-कुम्हड़
कुम्हड़-कुम्हड़

जीवन का ललाच
कुम्हड़-कुम्हड़
कुम्हड़-कुम्हड़
कुम्हड़-कुम्हड़
कुम्हड़-कुम्हड़
कुम्हड़-कुम्हड़
कुम्हड़-कुम्हड़
कुम्हड़-कुम्हड़
कुम्हड़-कुम्हड़
कुम्हड़-कुम्हड़

दिन का मात कंधा-कंधा,
धर धर
कुम्हड़-कुम्हड़
कुम्हड़-कुम्हड़
कुम्हड़-कुम्हड़
कुम्हड़-कुम्हड़
कुम्हड़-कुम्हड़
कुम्हड़-कुम्हड़
कुम्हड़-कुम्हड़
कुम्हड़-कुम्हड़

प्रतिवेदन के रबर]

स्वप्न-साक्ष्य

मैं किछोर धनबूझ
 प्रदुल तब कम पवित्र मुकुल मुहु
 बामन बैठित
 प्रत्यक्ष-मुक्त पाणिनी सताओं के
 क्षमाचल में मध्याह्न
 दांत छोटल बंध्या-या
 हिम जल से कुलले
 पुतिर्नी का बावर्च
 हरितवसना बसन्तरा का नि-स्वन स्वयं
 मुबार हो बडा का
 ठेरे मधुबती में प्रविष्टानिधि ।

कश्चित
 विम्वलित
 भूल छया सा
 मध्य कपनिधि में कुलमे ।
 गूम जल मेरा ।
 दूरतम हिम शिखर,
 बाग बचन
 हंसी की पांते
 कोकिल स्वर,
 निर्धर का धरधर

प्रभुल सहस्रियों का बल बँपन
 लासी है बोधय सुमधुगुण
 वह धमर धमर धल
 रमृति के प्रानल में
 सब से पूषक
 ब्रुहावन जावन
 स्वर्ण कलस सा
 रूप्य धमर में स्थापित ।

जीवन का लला वन
 कुहुरा अकाश
 बुध बुध
 हर्षित
 बीहड़ मुरम्य
 अनवर ओठहर
 किस किस में होकर बसा नहीं,
 किस राय-रोष में बसा नहीं ?

दिन वस मास बँवतार,
 घट घट
 दितने बँसे हो बने विनन ।
 रंसीन दितन
 भूमित धरपा
 माया का बीहावरण बँडु,
 बट वडा बावलों-मा वन में ।

वा उठा घटा सा ज़ेर बरब
 बिछुत, घन बर्बन
 कर्मिल बर
 सलप्ट हप्ट
 हो गया कान्त
 हो गया सतन्त्र
 छा गई पुन्य
 सबक हप्ट
 पुन्यापोकन
 नितपत्ता नितल संक
 प्राप्तुत करता स्वर्णाना
 नपुमय नितल नितल की

हातबिबात पुन हस रिय की
 बीस रू गई रिय
 बेक सब गया बरब
 सब गया बरब
 बीकन
 बीकन
 स्वर बीक
 बीक मन
 प्रीत-यजन
 घन बर्बन
 कोर नितर्बन
 प्राप्तुत संबर, संबर, संबरानि ।

जब भीवी बसकों में
 सोया है कोई स्मृति धिपु
 स्फुरित मिथका बस
 गिराए तनती
 कुनती प्यारों के कीमते वसन ।
 बोलो, बोलो
 कह दो कुछ तो
 सतों का नित संसार सुमुखि
 यह बयानेक से संदित बाधा
 कोमल फुलन समुत्त बल्य की ।



का बड़ा घड़ा सा घेर पमब
 बिछुटा, घन पर्वत
 ऊर्मित कबर
 घलपत हूय
 हो गया कागस
 हो गया स्तब्ध
 छा गई बुन्ध
 सबच्छ हृष्टि
 बुन्धायीवन
 नितबंस्त स्निग्ध संक
 प्रस्तुत करता स्वरुपा
 मधुमय विषय विनय को

हस्तविज्ञात पुच्छ कस दिन की
 कीत यह कई देय,
 बैस सब पमा बरस
 सब पमा बरस
 बीकन
 घीकन
 स्वर नील
 नील वन
 प्रीत-यवन
 वन पर्वत
 कोर बितर्जन
 प्राकृत संवर, धरुंघ, धरुंघानि ।

उम भीषी बलकों में
 सोया है कोई स्मृति-छिन्नु
 स्मरित बिसका बल
 छिराए लगती
 दुगती प्यारों के कीरीय बलम ।
 बोले, बोले
 कह दो कुछ तो
 ताँची का भित संसार समुद्रि,
 बह बयलेल है अकित बाबा
 कोनल पुनम समुद्रि डलप की ।



चेतावन

तिष्ठन्तु दो राष्ट्रों का
न बाधा बननु
भारत विभाजन कर लिया स्वीकार !
रेल के जंम बंम के साथ
बन्धु अपस्त तनु रीतामित्र को
धूम्य धड़ी कर
सत्ता हस्तान्तरण
स्वाधीनता का अवतरण
एक साथ हुआ बननु
सततज व्याज धीर कैसन में
बंया, अनुवा धीर संयम में
अपुन्य सिन्धु-कर्म में
किटना रक्त-धस्का बहा,
धाई लम्बा री भी लम्बा बहा ।

बहु का हमारी स्वाधीनता का समारंज
देव एह धिर भी बल
दो राष्ट्रों के अस्वीकरण का !

तप्य कर,
 तप्य कर,
 एक देश में से हुये उद्भूत
 धर्म्य हो
 धर्म्य हो
 तन हो,
 मन हो
 विचार हो
 मार्ग हो
 विपरीत भी विरीची
 विरहाकुता निमग्न
 कैसी हो विडंबना !

कैसी गति
 कैसी गति,
 शास्त्र का अवलोक,
 जीवन का क्षय
 धर्मरक्षा का विलय
 शास्त्र के नाम पर
 धर्मरक्षा का जीवन-वध !
 विद्वान् विद्व-बुद्ध रीति
 धर्मरक्षा की गति !

धर्म भी है तप्य
 न हुआ है धर्म धर्म रति
 भारत के भाग्य का ।
 धर्मरक्षा की जोर पर
 न दिङ्गने भी कुछ पाय ।

हिमालय का तिह-डार,
सीमान्त के जल पार
घाव की लोहित पीत सपनों से
वेष्टित रहा पुकार,
येतो, येतो ग्रहणी स्वतंत्रता के
नामवाधिकारों की रता के कर्तव्यार ।



चीन की मृत्यु पर

विपत्तनाम है नहीं
 कोरिया नहीं
 व तिब्बत
 तापो भी यह नहीं,
 नहीं यह ताइपेइ है ।
 यह भारत है चीन ।
 कस के हेतु बरकर कृप्य ।

मीठे मीठे मूल
 तिल कटु का ले अनुभव ।
 लोहित लैला लहाय
 कस से तीन
 बहा चीन का पथ
 मिट्टी बाने को व्यथ ।

बदमाशुमी भारत की
 है बचनबुद्ध देने की उनको मुठ
 कि जो
 अनिर्बन्धित और अर्वाचित
 कृप्य करता
 पुन प्राण लोभा से बलानु ।

[प्रियेन के रबर]

है जिसको शस्त्रों का पुनाम
है जिसको सेना का जर्मन
है जिसकी समुद्रतल पर आकाश
वह अक्षय मान है बीपक का
अग्ने ही बंकों का विनाश
करने को फिर फिर रहा चुन ।

यह दुरज का आकाश जाल,
संदेश नृत्य का लिये कड़ा
बस महाराष्ट्र का
जिसका घन बीरव विकास
आत्मा का सु खर
इसी है
वा क्योंकि आत्मिकामी वह
बुढानुवाही वह,
आत्म सम्पुष्ट
विश्व संस्कृति में वा जिसका पूर्वव्य स्थान
विस्तारवाह के न वा बड़े काल ।

अमुविष्ट बीला में
भूल हय
जल पड़ा अलिष्ट वन
स्वार्थ
स्वार्थ ही रह गया जरी हय
दूर हयि होवई विगय
हुसा आन्धा वह
सुखि संवर्धना के हैव बना बंजर ।

उत्तम मरुत कर्म
मया रक्षा है विश्व का
उत्तम धर्म गुरुओं से
कलक निपन्न कर
अनुपम करने की
मार्ग नहीं कोई छोड़
छोड़, छोड़ नहायीक !



सेना की हुफार

के हाथ बात बिजलीकर का
 हथ वर वर धर्म बढ़ाये ।
 हम सेनाली हूँ भारत के
 गिरि गुरु वीं से टकराये ।
 है कीन अलि भूमंडल पर
 जो वष में बाबा छाड़ी करे ।
 वर वर हिमालय के बढ़कर
 हम राष्ट्रध्वज बढ़ाये ।

वर चीन चीन का हूँ न वष
 वर रतुमेरी वर उठी यहाँ ।
 धर्म वर वर धर्म बढ़ाये ।
 हम हिम बिजली पर धार्ये ।
 हथ बाबा वर हिमालय के
 रस्ता हो बढ़ा-गुरु वर ।
 तिब्बत की निर्मल हथ का
 वर वर धर्म धर्म बढ़ाये ।
 होवई समाधि वर वर वर
 बाबा बाबा के वर वर ।
 धर्म वर वर वर वर वर
 हम वर वर वर वर वर ।



हिन्द की सेना

'विजय सारथ की आज भारत की'—

अक्षरित हित उठा घीब से ।

आतङ्काह्वी के झुंझों पर

जबमानक फिर उठा रोब से ।

घर घर बड़ बड़ बड़ बने युवक

बस एक लक्ष लेकर छाये ।

इस आनन्द के घोर सत्रघों

को न मिले रास्ता जाने ।

भीते भीती बगुनों से

भय हमें न बख हमारे डर ।

हम आकाशी के शीशाने फिर

हमे मेड़ियों से बसा कर ?

बर्ष भुर्रु करमे का रिपु का

हड़ घात हमने ठान लिया ।

हिम धिन्नरी के बार हिन्द की

शेना में अजिपान किया ।

मुक्तिवाहिनी भारत की आज

बड़ी सीलने को बंधन ।

आत उल्लूक अदम्य विमुक्त हो

सभी हुनार लक्ष्य धरन ।



भारत एक परिचय

अने किये साक्षात्कार न हुये
छापी है इतिहास जगत का ।
बाँटी सुनित तथा जग जग को
वितरित किया प्रताप सुनत का ।

तह प्रसिद्ध जगजग का प्रकाश
जियो धीरे धीरे हो जग को ।
स्वच्छा से विकसित हो जीवन
सुना भिने जग का जग जग को ।

नर नया कीद जगजग तक की
इच्छाओं को जग दिया है ।
कभी धरम-धन का न मूल्य
हमने कुछ प्रमाण किया है ।

सत्य साहिता के धागे का
हुकुम रसायन प्रकाश ।
जीवन का आधार बन गया
सिध जगत की वा जो प्रकाश ।

सात्र मुक्ति-कायी भारत की
कठिन बरीला का दिन आया ।
भूल बुद्ध की शिक्षाओं की
बीज हिमालय पर बहूँ धाया ।

बिसे मुक्ति का मुख्य बाण ते
भी बढ़कर व्याप्य है ।
बसे सात्र का नहीं धारणों
का ही डर साध है ।

पंचमीत का प्रसोता
पंचमीत भीष भक्त काभी ।
बौद्धिक के बिजय घोष
में भारत की बहुभाषी ।



रणांगण में

धत्ता भीम की क्या बिसात
ओ भारत की लसकारे ।
सर्वपावन कुण्ड नहीं धारम—
बल नहीं प्रबल प्रधारे ।

भुके हिमास्य काहे भारत
अविधल किन्तु कड़ा है ।
मात्रावी का स्वयं प्रतीक
सिंहरों पर प्रबल मड़ा है ।

तु प मृ प साजी बीरों के
मठपासे बाँधुर के ।
एक एक से मारे बस बस
बकि बीर समर के ।

कथा लिखी है पट्टाओं में
महन मभीर बनों में ।
बहा रक्त है जहाँ बल्ल बन
छड़ों बीर धनों में ।

[प्रतिवेदन के स्वर

बसो बसो बलकर बेघी
रत-हीघस मित्र भीरों का ।
बल बल लाका किया दुहाया
धैर्य तजर-भीरों का ।

भाये हुए मनु दिव्डीबल
झारत सदा रहेंगे ।
जना जगती के बिजल की
पुग पुग प्रजल कहेंगे ।



स्वागत, मुद्र !

संज्ञात द्वार पर आया स्वागत तेरा ।
 आगत को हमने विमुख न धर के केरा ।
 हमें प्रतिनि सत्कार स्वयं करना है ।
 परित्याग धीर से नहीं तनिक करना है ।
 यद्यपि हम संतत शान्तिवाच के हामी ।
 पर अस्वाचार समझ न मुद्र विराभी ।
 हम सतकारों से भीत न होने वाले ।
 हम आततर्प का रूप कुचलने वाले ।
 रक्षक संवीनों को सीनों पर उलूका ।
 है ऐल हमारे लिए आन पर बहना ।
 बोले मौनी बम बर्षा में डूब रहना ।
 है पाव मुद्र में मुद्र से 'बन्ध' तक कहना ।
 रक्त-मिसा देना धर्म हमारा प्यारा ।
 श्री शिरच्छेद बिलने मड़कर सतकारा ।
 बिरिन्दों की बम की ठोकर से बहना ।
 बढ़ते बलना मित हृदय शत्रु का बहना ।
 मापी कर लो की हाथ न फिर पड़ताभी ।
 धब केता मुद्र-विराम सोच क्या मापी ।
 रातों का संपन्न रक्तकण्ठ ही सिरता ।
 दिग्भ्रंत-बल बल बढ़ा न पीछे फिरता ।



[प्रतिदिन के स्वर]

स्वर्ग का आदर

उपकुमार आयोजन

बर्षा से पुला

भील निर्मल यवन

अमा निशा का घोर तिमिरावरण

अक्षरपादक तारों की नित्यमित लम्बा में

बल रहा प्रचार अनिधान उष

आकाशपद्मा के उज्ज्वल पुष्प पर

अमर ज्योतिषुओं के लोक में

निर्वाचन का परतक

बाली मलीन धिहीन

लोहकर्म की बद्धि पर

रक्त रश्मियों के आभ्यन्त से

हो रहा नत वाम,

संस्था से विह्वल ।

पुष्प आग्न बाठावरण

अनवर

अष्टि की लक्ष्मिबाह

घोर घोर बहू बाह

उत्तरे उपकुमार में वरुण

निम्न स्तर का न यही विचार ।

कुचमाली घों' मसाली यहाँ
 लोहिया है परन्तु वह सुखी बैमाली यहाँ :
 बनबिरोबी कार्यक्रमों में लगन
 मिथ्याबारी कही यहाँ ?

छन्दोघों के लोठ में
 क्षमति बल
 दुरभितल्लि बिना
 भूमता है सतत
 लाता है
 वरिबर्तन बिबर्तन
 नबासोक
 सहाय सौम्य एव है ।

इतना ही प्रस्तर है
 मत्स्य घोर स्वर्ग में
 पूरबी का बीजब
 येंधा है सुत्पु स्वार्थ से
 स्वर्ग में प्रमरणा का
 शुभादक्ष रक्षित है ।

बल बल में हुआ
 सोक्तम का बी स्वर्ण एव
 लक्ष की मरार्थ बेसी का रही हैं कल्प में
 कतके हेतु प्रेरणा का पुत्र
 कही घोर नहीं ।
 ऊर्ध्व हृष्टि करो
 घोर बैखो वह अपुत्र हृष्ट
 मियो बही बाबली ।

मानवता के उधार का वच
होया प्रसन्न ।
अन्तरिक्ष का ताराचरल
करो भरती वर वरल ।
तत्त्व जीवन
प्रसन्न वरल ।



ऊपसानी जो मसानी यहाँ
लोहिया है परागु यह दुखों बिमानी यहाँ ।
बनबिरोधी कार्यक्रमों में मज्ज
मिथ्याबारी कहाँ यहाँ ?

बनकाओं के मोठ में
कान्ति बज
दुरभिसन्धि बिना
भूमता है ततत
जाता है
वरिचर्तन विस्तार
बचानोच
तहब धीम्य वच से ।

इतना ही प्रगट है
मार्ग और स्वार्थ में
पूनी का बीजब
संधा है मृत्यु स्वार्थ से
स्वय में प्रमरता का
मुभाबर्त दक्षिण है ।

बन वस में बुबा
लोकतांग का जो स्वार्थ रच
यक की पराएँ बेसी का रही हैं कर्मम में
उनके हेतु प्ररता का मु ब
कहीं छोर नहीं ।
ऊर्ध्व हथि करो
छोर देखो वह मयुर्ब हय
वियो बही बावली ।

[प्रतिवेदन के स्व

मानवता के उद्धार का वध
होया घमस्त ।
घमस्ति का सबाबरलु
करो भरती पर बरलु ।
ब्रह्म जीवन
घमस्त भरलु ।



हेमरसोल्ड !

मुक-कल्प लोभल पर लोभाल बिगु
महाभानव हेमरसोल्ड !
दुव ली तुम हो बगर
लुरमित बिगल
ब्यालोन्बाल से मुन्हापी लोभ !

बिस्व जनतेवा का महाब बल
तुमने बिभाया होम प्रण
बाहुलि है किया लफल
बीबब का बल मिशन ।
किया बिफल
बिस्वजालि के बाहुरिवाँ का
निमित्त प्रयास ।

दुव बाव, बल बर बल
बाया दुम-बा लफुल
दुम बाउ हेमरसोल्ड
बरली बाकाल
बलरिब बाभिबाव के तुम्हाए
हैं लाली बली
कुचक्रिवाँ ने मिटा दिवै हों
बाहै लमल बिगु ।

बोंप दिया हो बाबन रक्त
 रोटी बिलकली उस दबभी के प्रचल से
 प्ररक्त हो बिबरा बहो
 बापुदान तब महामना ।

मित रहा डोर नहीं प्राज
 उस छोन्दे को
 काँक रहा गुन वह
 हर हर की अनिराज
 लोहित बनेति,
 विमलित — अमरित बाप
 उसे छा रहा है तिल तिल ।

बनकती बरिचयों से
 उड़ मये पतित कुच
 बहपनी
 सुग्य लोप लोप रचमय
 बैबल हो दीप तुम्ही
 बेबोपय परम पुरय ।

भारती उतारों दिवसुएँ,
 तुम्हारी निरय
 लाल लाल बुभित
 नमुष्यता के जीवन में
 प्रपुर्ब प्रसिद्ध बह
 बारत कर प्राति रमिनों का कर रचनपुट ।

डेर है धगधेर नहीं
 दुनियाँ में,
 मिथता है कम धक्का
 सुभासुम नामों का,
 ईला मर कर भी रहते छमर
 भीकर भी मरवसु होते हैं निःशेष किन्तु ।



गुटर गू

छोड़ा कटुतों का
 'गुटर गू' करता
 छतर छाया
 घर के बिछवाड़े
 बहुत की छाया लगे
 फिरछ-बंछ गिबिल
 हुक्ते नलत्रों छा ।

कला बिज्ञान के किछोर छाया
 मूक स्तम्भ
 बामिना बराबिता—
 कीनती बुझान
 महलेबतन ।
 धंतराप्पीय धंघ की तो न है बराबि
 धादुठ नहीं नहीं
 धर्मन धन्ध रगियन नहीं नहीं
 धनु ; धरियन धरबी नहीं नहीं
 तबिल, तेरागु बंगला टिगरी नहीं नहीं
 रोम तब जाया जिहंग ?
 रोम रजर दानिन ज न
 ताज दर दितकी है नुस्दछोल रोम रोम ?

'समस्त लोकोपे भला
 भावा भविति यद् ?
 सर्वान् पूर्णं ह्ये समर्थं
 ज्ञान विज्ञान के सुख लभ
 इतिहास पुराण का सत्य
 इतमें प्रकट
 साक्ष्य देव नहीं कोई एक
 सर्व भित्ति न हो उके ध्वस्त
 स्वप्न की सांस्कृतिक संन्या
 प्रसन्नकोष
 भावों की विचारों का
 दक्षिण है इस अनुस्यूत स्थापार में ।

'दुष्ट विचार
 पश्यन्तिना विहीन
 भावात्मक एकता का स्वप्न सिधे बीतते
 संघर्ष की तुला पर निज भाषाओं को लीनते
 प्रान्तविस्वासहीन
 प्रकिंचन, प्रक, बीन
 पश्यन्तिना की भाषा तुम्हें
 बीन नहीं देती बंधु ।

'बीन के अर्थ में
 जीवन का व्यापार
 बीन का कुछ ही दिन ।
 छोटे भाषे भाष पराधी भाषाओं का
 छविमें है मग्न करो मग्न

संस्कृति की

सहकारों से जो धीतधीत

चित्तमें रहते पुण्य-कर्म निहित

पुण्य-कर्म विहित जो

ब्राह्मण,

जो धीधन की धारणा

समाज का दर्पण,

चित्तमें धर्म मुखर

ध्वनीत के धीरे-पराक्रम का नायक ।

छोड़ी, छोड़ी वह चर्चा

धर्मा करी

मृत्तिका के डेलों की ।

राजमृत्ति के करलों में

विषाम प्राप्ति-सौभाग्य

जाप्य में नहीं सुगुनरी लात ।

बल यह निश्चित ।

जड़ घड़े बहुरंग पुष्प लील कर

नम्र में दूर दूर धति दूर ।

गुदरगुं अथहीन रथर मुद्रित ।

मुक्त स्तम्भ मुपीजन धाम अचित,

विनिमत धन-धन विरच्यारित मयम वचन ।



कैनेही के निघन पर

बीम हारपाय तुम्हारा
कर क्या तुमको सगर
तुमही कुसारा बिच का ?

बंरना का धर्म
मरना का समय
स्मृति में तुम्हारी
करता करेते बात लहलह संसार ।
ओ महाबाल सीम्य बीनेही ।
निरुण ते तिक कुड़ा निमकी बरेबर का ।

उत समायो को न बा जाल
न अपने कुम्हार का अनुमान
आपका बिच-सीमनस्य बी हारा का कुर्बू नार
तुम पर आवर कर
बहुन बहु करता न करापि ।
समय यह मुनिचित है
आज जब बिच के महान राष्ट्र
बंदय और सबेहो ते बर्बरित
अरबीकरण के मोह ते आत्मात
विनाश के कपार पर
बिभित्त भूक भित
बिचारमान अर्थमूह छड़े ।

धनुष का मुसौदा
 होगया उसका स्वर्ण ।
 पिढाने के प्रयास में
 तुम्हें देवता अभिनयकरता का बरदान
 उस भाग्यहीन नरायण का बखपात ।
 मावी मन्वन्तर
 इने विने धरायकीति शिरोरत्नों की माना दें
 तम्हें रचावित कर होमये कूठहाय ।

धनुष पारश्वर्ष ।
 ईप्सी ॥ धनुष जय दें हुगाम्
 प्रस्तुत हुआ तुम्हारे धनमान से
 प्रस्तुत धनी-धनी
 प्याज हुई एक तमबैरवा
 धनु मित्र से समान ।
 दिया धनुमोशन नि-लोचन ने धनुषा के ।

एक-मात्र समय बरत
 बड़ा रहे धडा-समन
 पुण्य स्मृति को तुम्हारी
 धनुषाग है धनुष शोनि ।



कैनेडी के निधन पर

कोन हत्यारा तुम्हारा
कर दिया तुमको दायर
तुमको हुसारा विश्व का ?

बंशता का धर्म
धरम का जमान
सृष्टि में तुम्हारी
बरता करेमे छत सहस्र संवरतर !
ओ महाशाल सौम्य कैनेडी !
सिद्ध है सिद्ध हुआ बिगडी बरंपरा का ।

कत दमायी को न का ज्ञान,
न अपने हुम्नाय का अनुमान
धन्यवा विश्व-सौमनस्य की हुरबा का दुर्बह भार
तुम पर क्यार कर
बहुन बहु करता न क्यापि ।
तप्य यह सुनिश्चित है
आज अब विश्व के महान राष्ट्र
संसय सीर लबैहो है बर्बरित
घस्त्रीकरण के योग्य है घातकगत,
पिनाय के क्यार कर,
बिगित भूक पित
बिचारमान कर्तव्यमूढ़ सहे ।

धनका का मुकीदा
होगया जगदा इत्यर्थ ।
मिटाने के प्रयास में
तुम्हें देवता अभिनवकरता का बरदान
उस भाग्यहीन नरायण का बख्शनाह ।
भाभी भावगतर
इने बिने धरापकीनि प्रिरोत्तों की भागा में
तन्हें स्थापित कर होनवे हठहृत् ।

धनुष धान्धव ।
ईश्या ह धनुषा जग में हुताम्
प्रस्तुत हुधा नष्टाहे धनमान है
प्रदुभुत मन्त्री भाव
स्वाहा हुई एक समवेदना
प्रभ मित्र में नमान ।
दिया धनुषमोहन द्वि-लोचन के बनुवा है ।

एक-नाय उमम बरा
बड़ा रहे धाटा-ममन
पुत्र स्मृति की तुम्हारी
पनलगा है धराह ग्योनि ।



कवि और काव्य

कवि की काव्य दृष्टि

काव्यालोचन की ही क्यों उसे बाह्य ?

सावद्योष का बन्धक

मनोवी कवि

बहुधा रहता अध्यात्म

विषय वस्तु के बीछे

घोरित भावों और विचारों की छाया में ।

प्रायः सुन्दरतम वीक्षिका

न बाई जाती कवि कंठों से ।

वे रहती फिर मीन

अप्रकृत

देख न पाती वे प्रकाश विमलसि का ।

कोलाहल साहित्य हाव का

करता उनकी विषय

अप्रत्यक्ष का अप्रकृति के मात

सहज सीमा-मध्यु सार ।

उपलब्ध की धुन

धिया लेती स्वप्नित रमणीय दृश्य जगती के ।

कवि कहुरे में ही पाता वीर्य

विराजति वीरिराम

अनिराम अजीवित ।

कीर्ति कामवा टपे उसे क्यों

बीछाबाहिन के चरणों में

जिसका बासीनाद लपकित ।

विजय वराज्य अगवैशित हूँ

जीतो मैं बीया वल्लभा कवि ।

